1001

M.A. IV Sem. Main Examination 2020

HINDI

Paper - I

आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास

M.M.: 85
Mini.Pass.Marks : 29

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य है। सभी के अंक उनके सम्मुख अंकित किए गए हैं।

प्र. 1 निम्नांकित पद्यांशों की संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए - 3×15=45

(क) अहे निष्ठुर परिवर्तन !
तुम्हारा ही तांडव नर्तन
विश्व का करुण विवर्तन !
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन,
निखिल उत्थान, पतन !
अहे वासुकि सहस्त्र फन !
लक्ष्य अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरंतर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षस्थल पर !
शत-शत फेनोच्छवासित, स्फीत फुतकार भयंकर
घुमा रहे हैं घनाकर जगती का अंबर !

Contd..

अथवा

नौका से उठतीं जल-हिलोर,
हिल पड़ते नभ के ओर-छोर ।
विस्फारित नयनों से निश्चल, कुछ खोज रहे चल तारक दल
ज्योतित कर नभ का अंतस्तल,
जिनके लघु दीपों को चंचल, अंचल की ओट किये अविरल
फिरतीं लहरें लुक-छिप पल-पल ।
सामने शुक्र की छवि झलमल, पैरती परी-सी जल में कल,
रुपहरे कचों में ही ओझल ।
लहरों के घूँघट से झुक-झुक, दशमी का शशि निज तिर्यक्-मुख
दिखलाता, मुग्धा-सा रुक-रुक ।

(ख) द्वीप हैं हम ! यह नहीं है शाप । यह अपनी नियती है ।
हम नदी के पुत्र हैं । बैठे की क्रोड में ।
वह बृहत भूखंड से हम को मिलाती है ।
और वह भूखंड अपना पितर है ।
नदी तुम बहती चलो ।
भूखंड से जो दाय हमको मिला है, मिलता रहा है,
माँजती, सस्कार देती चलो । यदि ऐसा कभी हो -

अथवा

वाद्य उठा साधक ने गोद रख लिया ।
धीरे-धीरे झुक उस पर, तारों पर मस्तक टेक दिया ।
सभा चकित श्री - आरे, प्रियंवद क्या सोता है ?
केशकम्बली अथवा होकर पराभूत
झुक गया तार पर ?
वीणा सचमुच क्या है असाध्य ?
पर उस स्पन्दित सन्नाटे में
मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा -
नहीं, अपने को शोध रहा था ।

(ग) आत्मचेतस् किन्तु इस
व्यक्तित्व में थी प्राणमय अनबन...
विश्वचेतस् बे-बनाव !
महत्ता के चरण में था
विषादाकुल मन !
मेरा उसी से उन दिनों होता मिलन यदि
तो व्यथा उसकी स्वयं जीकर
बताता मैं उसे उसका स्वयं का मूल्य

उसकी महत्ता !

व उस महत्ता का

हम सरीखों के लिए उपयोग,

उस आन्तरिकता का बताता मैं महत्व !

अथवा

सब तरफ़ अकेला,

शिखर पर खड़ा हूँ ।

लक्ष्य-मुख दानव-सा, लक्ष-हस्त देव सा ।

परन्तु, यह क्या

आत्म-प्रतीति भी धोखा ही दे रही !!

स्वयं को ही लगता हूँ

बाँस के व कागज के पुट्ठे के बने हुए

महाकाय रावण-सा हास्यप्रद

भयंकर !!

प्र. 2 ''पन्त की भाषा सुकोमल शब्दावली और माधुर्य से समन्वित है ।'' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में पन्त की भाषा की विवेचना कीजिए । 15

अथवा

''अज्ञेय'' के काव्य में मानवीय दायित्व बोध के साथ-साथ भारतीय अस्मिता की पहचान भी है ।'' विवेचना कीजिए ।

अथवा

'मुक्तिबोध की कविता में 'फेन्टेसी' है या केवल काल्पनिक भावुकता है ।' तर्क सहित समीक्षा कीजिए ।

प्र. 3 नई कविता क्या है इसकी प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए । 10

अधवा

प्रयोगवाद को परिभाषित करते हुए प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए ।

प्र. 4 निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए - $2 \times 5 = 10$

(क) 'हालावाद'

(ख) तार सप्तक

(ग) भवानी प्रसाद मिश्र की गीत शैली की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

(ख) प्रगतिवाद ।

प्र. 5 निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच के अतिसंक्षिप्त उत्तर दीजिए - $1 \times 5 = 05$

(1) 'संसद से सड़क तक' के रचियता का नाम लिखिए।

(2) 'मधुशाला' के लेखक का नाम लिखिए।

(3) हिन्दी साहित्य में किसको आधुनिक मीरा के नाम से जाना जाता है ?

(4) 'वह तोड़ती पत्थर' कविता किस प्रकार की कविता है- प्रगतिवादी या प्रयोगवादी।

(5) 'गीत फरोश' के रचयिता का नाम लिखिए।

(6) 'ताज' कविता के रचयिता का नाम लिखिए।

(7) 'नकेनवाद' से सम्बंधित कवियों का नामोल्लेख कीजिए।

(8) 'तार सप्तक द्वितीय' के संपादक नाम लिखिए।

* * * * *